→ स्पिनोजा : द्रव्य के प्रत्यय तथा गुण और पर्यायों से उसके अन्तः सम्बन्ध

स्पिनोजा डेकार्ट की द्रव्य सम्बन्धी अवधारणा में परिवर्तन करते हुए केवल निरपेक्ष द्रव्य की सत्ता को स्वीकार करता है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य केवल एक होता है चित एवं अमित ईश्वर के गुण है। द्रव्य एक अद्वितीय, स्वतः सिद्ध, स्वप्रकाश, नित्य, निरपेक्ष आदि है।

स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर व जगत में तादात्म्य सम्बन्ध होता है। यही सर्वेश्वरवादी अवधारणा है अर्थात 'विश्व ईश्वर है ईश्वर विश्व है।'

यद्यपि स्पिनोजा द्रव्य को निर्गुण कहता है किन्तु यहां निर्गुण कहने का तात्पर्य गुणरहित होने से नहीं है बल्कि सीमित गुणों के अभाव से है। द्रव्य अनन्त गुणों से युक्त है। स्पिनोजा गुणों को परिभाषित करते हुए कहता है कि "गुणों से मेरा अभिप्राय वह है जिसे बुद्धि द्रव्य का सारतत्व समझती है।"

चूंकि द्रव्य में अनन्त गुण हैं किन्तु मनुष्य को इन अनन्त गुणों में से केवल विचार एवं विस्तार का ही ज्ञान हो सकता है। विचार एवं विस्तार ~~विन्न~~ एक दूसरे से भिन्न एवं स्वतंत्र गुण हैं। किन्तु परस्पर अभिगम्य हैं क्योंकि प्रत्येक गुण ईश्वर के सारतत्व को अभिव्यक्त करता है।

गुणों के सीमित रूप ही पर्याय हैं। अतः प्रत्येक विस्तृत वस्तु विस्तार के माध्यम से द्रव्य का ही पर्याय है। इसी प्रकार प्रत्येक मानसिक अवस्था विचार के माध्यम से ईश्वर का ही पर्याय है। इस प्रकार की यह सिद्ध होता है कि ईश्वर विश्व है और विश्व ईश्वर है।

इस प्रकार स्पिनोजा इकाई ईश्वर की एक मात्र सत्ता स्वीकार करते हुए उसके गुणों की व्याख्या करते हैं तथा पर्याय (विभाव) सिद्धान्त के अनुसार द्वारा अनुभव जगत की व्याख्या करते हैं।

स्पिनोजा : गुण विषयक सिद्धान्त

~~स्पिनोजा~~ यद्यपि स्पिनोजा द्रव्य को निर्गुण कहता है तथापि वह द्रव्य को पूर्ण तथा सर्वगुण सम्पन्न मानता है। द्रव्य अनन्त गुणों से युक्त है। स्पिनोजा ~~द्रव्य~~ गुण को परिभाषित करते हुए कहता है कि "गुणों से मेरा अभिप्राय वह है जिसे बुद्धि द्रव्य का सारतत्व समझती है।"

स्पिनोजा के द्वारा दी गई गुण की पूर्वोक्त परिभाषा विवाद का विषय रही है। इसके सन्दर्भ में आलोचकों के दो वर्ग हैं-

i- प्रत्ययवादी - हीगल एवं अर्डमान दोनों विचारक स्पिनोजा द्वारा दी गई परिभाषा के 'बुद्धि समझती है' शब्दों पर जोर देकर आगे बढ़ते है। इस स्थिति में गुण आत्माश्रयी हो जाते हैं वे द्रव्य के वास्तविक गुण न होकर बुद्धि द्वारा आरोपित गुण हो जाते हैं।

ii- यथार्थवादी - कुनो फिशर एवं फ्रैंक थिली के अनुसार गुण द्रव्य के सारतत्व है। गुण वस्तुतः ईश्वर के स्वरूप हैं उसके वास्तविक एवं तात्विक धर्म हैं।

चूंकि द्रव्य अनन्त गुणों से युक्त है किन्तु मनुष्य इनमें से सिर्फ दो ही गुणों को जान सकता है - विचार एवं विस्तार इन दोनों गुणों के पारस्परिक सम्बन्ध के आधार पर हम अन्य गुणों के पारस्परिक सम्बन्धों का ज्ञान भी प्राप्त कर सकते है।

स्पिनोजा ने द्रव्य और गुण के स्वरूप पर दो दृष्टियों से विचार किया है -

पारमार्थिक दृष्टि से ईश्वर निर्विशेष है उसमें अनन्त गुण हैं अर्थात वह सर्वगुण सम्पन्न है। अतः सीमित मानव बुद्धि एवं भाषा द्वारा उसका निर्वचन नहीं हो सकता। अतः इस दृष्टि से ईश्वर अनिर्वचनीय है।

अन्तिम दृष्टि से यह सृष्टि वास्तविक है। गुणों की अभिव्यक्ति द्रव्य की स्वाभाविक क्रियाशीलता का परिणाम है द्रव्य नित्य परिणामी पर विकारवान है।

इन दोनों दृष्टिकोणों की पुष्टि उसके द्वारा प्रतिपादित ज्ञानमीमांसा से होती है। वह समस्त लौकिक ज्ञान को काल्पनिक ज्ञान कहता है। द्वितीय स्तर पर बौद्धिक ज्ञान आता है। यह ईश्वर के विश्व रूप का ज्ञान है। ~~जिसमें ईश्वर के निर्गुण~~ सर्वोच्च स्तर प्रज्ञात्मक ज्ञान है जिसमें ईश्वर के निर्गुण रूप का साक्षात्कार होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रत्ययवादियों तथा यथार्थवादियों द्वारा की गई व्याख्याएं एकांगी हैं। स्पिनोज़ा ईश्वर में मानव-बुद्धि द्वारा परिकल्पित गुणों और मूल्यों का निषेध करता है वस्तुतः यह किसी विशिष्ट धर्म का नहीं बल्कि एक सार्वभौम धर्म को सबल आधारशिला पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है